International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 47-48

कबीर की समाज–सुधारवादी दृष्टि

Birmati
Research Scholar, Distance Learning, Dept. of Hindi, Kurukshetra, University

सारांश
'साहित्य समाज का दर्पण होता है। कबीरदास ने भी अपने युग को समसामयिक परिस्थितियों को भली प्रकार से देखा, समझा और अनुभव किया और शाश्वत साहित्य की रचना कर डाली। इसके साथ–साथ खण्डनात्मक स्वर अपनाते हुए जनसाधारण में एक नयी चेतना लोने का पुयास किया। आज की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखकर भले ही हमें यह आभास होता है कि हम उत्तर–कबीर युग में जी रहे है, लेकिन जब हम कबीर काव्य को ध्यानपूर्वक मनन करते है तो स्पष्ट होता है कि उसमें आज के, हमारे समय और समाज के अनेक जटिल सामाजिक–सांस्कृतिक प्रश्नों की पहचान के संकेत है और उनके उत्तर की सम्भावनाएँ भी।

प्रस्तावना
कबीर अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है– महान् और इस महान् शब्द को सार्थक कर दिखाया युग स्रष्टा कबीर ने, उनको कवि के रूप में बाद में और पहले प्रसिद्व समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है। कबीर का युग संक्रान्ति काल से गुजर रहा था। उन्होनें तत्कालीन समस्त क्षेत्रों में विषमताओं, मत–मतान्तर के झगड़ों और पाखंडों को दूर कर, जाति–पाति, ऊंच–नीच के भेदभाव को मिटाकर सबको एक राह पर लाने को प्रयत्न किया, अतः उन्होने हिन्दू, मुसलमान, बौद्व, जैन अवधूत, ज्ञानी, जोगी जिसमें जो भी दोष देखा, किसी को उसके लिए क्षमा नहीं किया, सबकी निर्भीक और निष्पक्ष आलोचना की, जनता को पथभ्रष्ट करने वाले तथा उसमें पारस्परिक द्वेष तथा वैमनस्य की भावनाओं का उद्रेक करने वाले पंडितों, धर्मगुरूओं, मुल्लाओं और काजिओ को भी कड़ी फटकार लगाते हुए हिन्दू और मुसलमान को 'राम' का भजन करने की सलाह देते है।

'' कहे कबीर एक राम भजहु रे, हिन्दु डरक न कोई।
हिन्दू डरक का कर्ता एकै ता गति लखि न जेइ''।।1

कबीर के राम–रहीम की एकता के संबंध में आचार्य शुक्ल का कहना है – '' उपासना के बाह्य स्वरूप आग्रह करने वाले और कर्मकांड को प्रधानता देने वाले पंडितों और मुल्ला दोनो को खरी–खरी सुनाई और राम–रहीम की एकता समझकर ह्रदय को शुद्व और प्रेममय करने का उपदेश दिया। देशाचार और उपासना विधि के कारण मनुष्य–मनुष्य में जो भेदभाव उत्पन्न हो जाता है उसे दूर करने का प्रयास उनकी वाणी बराबर करती रही,''

कबीर का आविर्भाव ऐसे युग मे हुआ जबकि सारा राष्ट्र राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से पतनोन्मुखी हो रहा था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भक्तिकाल के उदय में राजनीमि परिस्थितियों को प्रमुख कारण मानते हुए लिखते है –

''देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया,''2

समाज की दशा राजनीति और धर्म से ही प्रभावित होती है जबकि इस युग में दोनों ही विकृत हो रहे थे तो समाज की दशा कैसे अविकृत रह सकती थी।

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'कवितावली' की निम्नलिखित पंक्तियों से तत्कालीन स्थिति का स्पष्ट परिचय मिलता है .....

'' खेती न किसान को, भिखारी के ने भीख बलि।
वनिक को वनिज न चाकर को चाकरे ।।
जिविका विहीन लेाग सीधमान सोच बस ।
कहै एक एकन सौ, कहॉ जायं, का करी।। 3

राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों को विकृत स्थिति ने कबीर को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया, कबीर ने अपने समय के समाज का यथातथ्य वर्णन किया है। उन्होने जो कुछ कहा है, वह समाज साक्षेप हैं। कबीर ने अपने देश और काल को समक्ष रखकर, व्यष्टि और समष्टि की गहराइयों में प्रवेश करके जो अनुभूतियां प्रस्तुत की हैं, उन्ही में तो व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट किया है। वे समाज की खबर लेते समय व्यक्ति के अन्तस को भी टटोलते खोजते रहे हैं। यदि कबीर की युक्तियों को उनके सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इतिहास को नया प्रकाश और नयी सम्पत्ति उपलब्ध हो सकती है।

''कबीर की वाणी ने समाज क्षेत्र मे एक और बहुत बड़ा कार्य किया है। वह है–
सात्विकता और और आचरण–प्रवणता का प्रचार उन्होने समाज में सात्विक वृतियों के प्रचार के लिए बडा तप किया था,'' 4

कबीर ने धार्मिक क्षेत्र में अव्यवस्थित और विश्रंखलित स्थिति में सुधार करना परमावश्यक समझा, इस सन्दर्भ में रामकुमार वर्मा का कहना है–

''कबीर के पहले भी हिन्दू समाज में कितने ही धार्मिक सुधारक हुए थे, पर उनमें अप्रिय सत्य कहने का साहस नहीं था। कबीर की शिक्षा मे हमे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की सीमा तोडने का यत्न दृष्टिगत होता है। यह उनकी आन्तरिक अभिलाषा थी,'' 5

कबीर मुर्तिपूजा के घोर विरोधी थे जिसका अंकन उन्होने निम्न पंक्तियों में किया–

'' पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार।
ताते तो यह चाकी भली, पीस खास संसार,''

कबीर एक वर्गविहीन समाज बनाना चाहते थे। उन्होनें जहां कहों ढोंग, दिखावा, कष्ट,स्वांग, प्रपंच, छुआछूत, छल, छद्म देखा, वही निर्भय होकर प्रहार किया। उन्होने उन कृत्रिम और हास्यास्पद लोकाचारों के विषय में जिनका वेद और धर्मग्रन्थ पूरा–पूरा समर्थन करते हैं, प्रहार किया

'' जीवत पित्रहि मारहि डंडा मूंवा पित्र ले धालैं गंगा।
कहै कबीर मोहि अचरज आवै कडवा खाई पित्र क्यूं पोवे। 6

सामाज सुधार की दृष्टि से कबीर के महत्व को स्वीकारते हुए मैनेजर पांडेय कहते हैं।

''कबीर केवल अपने युग की चिन्ता के कवि नहीं हैं, वे भारत के अतीत को तेजस्वी ज्ञानधारा और भविष्य को सम्भावनाओं के भी कवि है।''

कबीर की वाणी आने वाले हिन्दुस्तान का सपना है, जिसमें दुनियादारी और दुनिया का सपना है, आध्यात्मिक और आत्मिक जीवन का खूबसूरत संगम बनाने वाला है। कबीर केवल अपने युग

की नयी चेतना के जागरण के प्रेरणा–स्त्रोत ही न थे, वे आधुनिक भारतीय नवजागरण के अग्रदूत भी हैं। यह कहना गलत न होगा कि आधुनिक भारतीय नवजागरण की चिन्तनधारा में जो कुछ देशज, उदार, अग्रगामी और जनोन्मुख है, उसके निर्माण में कबीर काव्य और उनकी सामाजिक दृष्टि की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. रामकिशोर शर्म (संपादक) : कबीर ग्रन्थावली : पृ. 61
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्लः हिन्दी साहित्य का इतिहासः पृ. 44
3. रामचन्द्र शुक्ल : तुलसी ग्रन्थावलीः पृ. 185–86
4. गोबिन्द त्रिगुणायतः कबीर की विचारधाराः पृ. 339
5. रामकुमार वर्मा : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ. 264
6. नामवर सिंह प्रधान सम्पादक : आलोचना (त्रैमासिक पत्रिका) पृ. 281